# तराई में खरीफ धान की पैदावार पर एक पैनल चर्चा का आयोजन

पंतनगर। 7 जून, 2010। पंतनगर विष्वविद्यालय में संचालित अखिल भारतीय समन्वित धान सुधार परियोजना तथा कृषक मंच, काषीपुर के तत्वावधान में 'खरीफ धान में घटती उत्पादकता' विषय पर एक पैनल चर्चा का आयोजन किया गया जिसमें धान परियोजना से सम्बन्धित वैज्ञानिक डा. एस.एन. तिवारी, डा. ए.पी. सिन्हा, डा. पी.सी. पाण्डे, डा. डी.के. सिंह, डा. सुरेन्द्र सिंह, डा. पी.सी. श्रीवास्तव तथा डा. के.एस. शेखर ने भाग लिया। कृषक मंच काषीपुर के अध्यक्ष डा. समर पाल सिंह तथा मंत्री श्री अरून भक्कू के साथ मंच से जुड़े प्रगतिषील किसानों ने चर्चा में भाग लेकर खरीफ धान में लगातार घट रही उत्पादकता पर चिंता जतायी तथा वैज्ञानिकों से इसका कारण और समाधान खोजने का आग्रह किया।

गहन विचार–विमर्ष के पष्चात् वैज्ञानिक तथा प्रगतिषील किसान इस निर्णय पर पहुँचे कि घटती पैदावार का मुख्य कारण रोपाई के लिए 30 से 35 दिन की नर्सरी का प्रयोग, प्रति वर्ग मी. क्षेत्रफल में 20 से 25 पौधों की संख्या, असंतुलित उर्वरकों का प्रयोग, गलत सिंचाई की विधियाँ तथा फसल में कीटों तथा बीमारियों का प्रकोप और उसके नियंत्रण के लिए गलत विधि से गलत दवाओं का प्रयोग है। वैज्ञानिकों ने तराई के समस्त कृषकों को सुझाव दिया कि नर्सरी के लिए प्रति 10 वर्ग मी. स्थान में केवल 500 ग्राम ही बीज डालें तथा रोपाई के लिए 21 दिन की नर्सरी इस प्रकार लगायें कि प्रति वर्ग मी. स्थान में 45 से 50 पौधें हों। नर्सरी में आवष्यक उर्वरकों मुख्य रूप से जिंक का प्रयोग करें। मुख्य फसल में नत्रजन, फॉस्फोरस, तथा पोटाष 120:60:40 के अनुपात में डालें। फॉस्फोरस तथा पोटाष की पूरी मात्रा रोपाई के समय जमीन में डालें जबकि 50 प्रतिषत नत्रजन रोपाई के 15 दिन बाद खेत में डालें। शेष नत्रजन को दो बार टिलरिंग तथा पैनिकल इनिषियेषन के समय डालें ताकि फसल को आवष्यक खुराक मिल सके। पानी हमेषा खेत में खड़ा न रहने दें और कुछ अन्तराल पर खेतों को थोड़ा सुखाते रहें लेकिन ध्यान रहे कि दरार न पड़ने पाये। वैज्ञानिकों ने किसानों को बताया कि उत्तराखण्ड की तराई कीटों तथा बीमारियों के साथ–साथ दवा विक्रेताओं के लिए स्वर्ग समान है जबकि किसानों के लिए अत्यन्त अहितकारी है। किसानों को अपने हित की रक्षा के लिए सोच समझ कर पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के पष्चात् सही समय पर सही दवाओं का सही मात्रा में तथा सही तरीके से प्रयोग करना चाहिए ताकि कीटों तथा बीमारियों की समस्या को बढ़ने से रोका जा सके तथा वातावरण को बिना हानि पहुँचाये लाभकारी मूल्य प्राप्त किया जा सके। वैज्ञानिकों ने कीटों तथा बीमारियों के नियन्त्रण के लिए उपयोगी दवाओं की जानकारी दी तथा यह सुझाव दिया कि कभी भी छिड़कने वाली दवा को बालू या खाद में मिलाकर नहीं डालना चाहिए क्योकि उससे कोई फायदा नहीं होता। दवाओं के छिड़काव के लिए उचित उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए तथा कभी भी कई दवाओं को एक साथ मिलाकर टैंकरयुक्त प्रेषर पम्प द्वारा छिड़काव नहीं करना चाहिए क्योकिं इस विधि से छिड़काव करने पर अधिकतर दवा मिट्टी में चली जाती है और फसल को नुकसान पहुँचाने वाले कीटों एवं बिमारियों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

वैज्ञानिकों ने कृषकों को सलाह दी कि यदि उपरोक्त बतायी गयी विधियों से धान की खेती की जाय तो निष्चित ही खरीफ धान की पैदावार में कमी नहीं आयेगी। अन्य किसी समस्या के समाधान के लिए किसान 05944–235398 पर सम्पर्क कर सकते हैं।